सहस्रांशु ब्रह्मयज्ञ

आह्वान पत्रिका

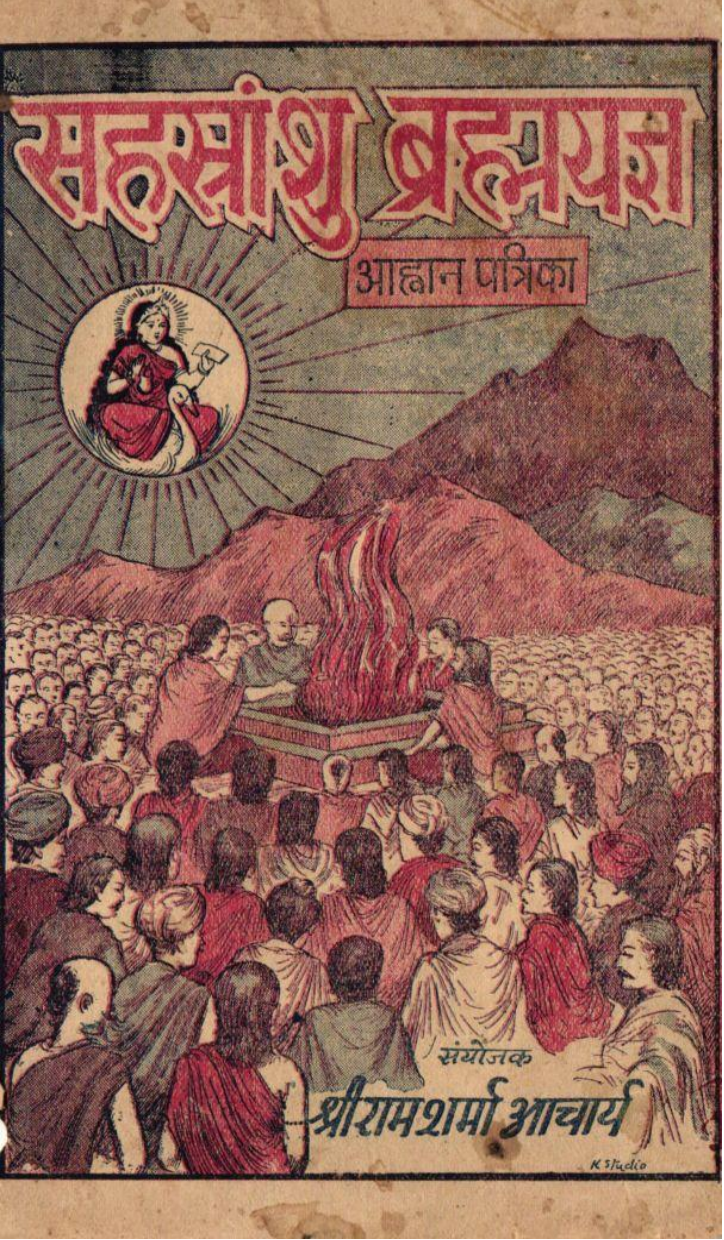

संयोजक

श्रीरामशर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तपश्चर्या का आमंत्रण

आत्म कल्याण के अनेक साधन हैं और उन सबका अपना अपना महत्व है। कथा, उपदेश सुनने एवं स्वाध्याय करने से आत्म ज्ञान की वृद्धि होती है। सेवा, सहायता, एवं परमार्थ से यश तथा प्रत्युपकार मिलता है। दान एक प्रकार की रिजर्व पूँजी है जो अनेक गुनी ब्याज समेत वापिस मिलती है। हवन कीर्तन, देव पूजन, तीर्थयात्रा, सत्संग आदि से भावना तत्व का विकास होता है। यह सभी मार्ग आवश्यक हैं परन्तु इन सबसे अधिक आवश्यक 'तप' है।

तपाने से जैसे सोनेका मल जल जाने पर वह पूर्ण शुद्ध हो जाता है वैसे ही 'तप' साधना से आत्मा के पाप, मल एवं कुसंस्कार नष्ट होते हैं। तप की अग्नि से अन्तः करण में प्रकाश उत्पन्न होता है जिससे अविद्या का अन्धकार दूर हो जाता है। तप की अग्नि में जब प्राण तपते हैं तो एक प्रचण्ड आत्म शक्ति उत्पन्न होती है। जिसके द्वारा देवताओं के आसन भी हिल जाते हैं और तपस्वी अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। हमारा धार्मिक इतिहास साक्षी है कि पूर्व काल में ऋषि मुनि, सुर असुर, गृही विरागी आदि सभी श्रेणी के लोग तपस्याद्वारा अद्भुत वरदान और सिद्धियाँ प्राप्त करते रहे हैं।

तप का सर्व श्रेष्ठ, सर्व प्रधान, सर्व सुलभ माध्यम 'गायत्री' है। 'सहस्रांशु गायत्री ब्रह्म यज्ञ' इस युग का एक अपूर्व, अद्भुत एवं महान तप है। इसमें सम्मिलित होने के लिए सभी सत्पात्रों को, कल्याण मार्ग के पथिकों को इस पुस्तक द्वारा हम आमन्त्रित करते हैं।

श्रीराम शर्मा आचार्य।

गायत्री संस्था (अखण्ड-ज्योति प्रेस) मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सहस्रांशु गायत्री ब्रह्म यज्ञ

का

❀ आयोजन और आह्वान ❀

चौबीस-चौबीस लक्षके चौबीस महापुरश्चरण पूरे करने पर हमने गत आश्विन सं० २००८ की नवरात्रियों में पूर्ण निराहार, केवल जल के आहार पर जो उपवास तपश्चर्या की थी उसमें माता का कुछ विशेष सन्देश एवं प्रकाश प्राप्त हुआ। गुरु देव के आदेशानुसार २४ महा पुरश्चरणों का जो संकल्प किया था वह पूरा हो जाने पर अपने आध्यात्मिक पिता (गुरु) के आदेश की पूर्ति हो गई अब माता की बारी थी, उनके चरणों में मस्तक रख कर आदेश मांगा तो उन्होंने "सहस्रांशु ब्रह्म यज्ञ" करने का आदेश दिया और उसका सारा विधान भी बताया। आज्ञा का शिरोधार्य करना ही एक मात्र हमारा कर्तव्य था, उनके चरणों की साक्षी लेकर इस महायज्ञ का संकल्प कर लिया गया। एक मास तक आयोजना बनाने के उपरान्त कार्तिक सुदी ११ (देवोत्थान) सं० २००८ से इसका प्रारम्भ भी कर दिया गया है।

माता की प्रेरणासे आरम्भ हुए इस "गायत्री सहस्रांशु ब्रह्म यज्ञ" की योजना इस प्रकार है। (१) यह यज्ञ किसी एक ही स्थान तक सीमित न रह कर एक हजार स्थानों में होगा, (२) जैसे सूर्य की सहस्र रश्मियाँ होती हैं, शेष जी के सहस्र मुख हैं, मस्तक के ब्रह्म रंध्र में अवस्थित महापद्म में सहस्र पंखुड़ियाँ होती हैं, उसी प्रकार यह यज्ञ भी सहस्रों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऋत्वजों द्वारा पूर्ण होगा. (३) इस यज्ञ में १२५ करोड गायत्री महामन्त्र का जप किया जायगा। (४) १२५ लाख आहुतियों का हवन होगा। (५) १२५ हजार उपवास होंगे। (६) १२५ हजार (सवालक्ष) व्यक्तियों को गायत्री विद्या का समुचित ज्ञान कराया जायगा।

यह कार्य इतना विशाल है कि कल्पना मात्र से मस्तक चकरा जाता है। आज के युग में भोग और स्वार्थ की प्रधानता है, धार्मिक प्रवृत्ति के मनुष्य कोई विरले ही होते हैं। ऐसी दशा में इतनी बड़ी संख्या में ऋत्वजों का तत्पर होना कठिन प्रतीत होता है। परन्तु दूसरे ही क्षण नव आशा का संचार होता है कि महाशक्ति अपना काम स्वयं करेगी। हमें तो केवल निमित्त मात्र बनना है।

प्राचीन काल में महा प्रभु अंगिरा के आदेशानुसार नारद जी ने अधार्मिकता का परिमार्जन करने के लिए २४ करोड भगवद्भक्त बनाने का व्रत लिया था। नारद जी ने अपनी शक्ति से नहीं दैवी शक्ति की सहायता से उसे पूरा किया था। हमें "सहस्रांशु ब्रह्म यज्ञ" को प्रेरणा देने वाली प्रेरक शक्ति ही प्रधान साधन बनेगी, हमारे जैसे तुच्छ व्यक्ति तो अपनी अयोग्यता और कार्य की महानता इन दोनों की तुलना करने मात्र से काँप जाते हैं।

यह बात भली प्रकार समझ लेने की है कि यह महायज्ञ अत्यन्त गम्भीर सत्परिणाम उत्पन्न करने वाला है। इनमें युग परिवर्तन के बीज छिपे हुए हैं। जैसे नव प्रभात की पुण्य सन्ध्या में ब्राह्मी साधना आवश्यक होती है। इसी प्रकार नानाविधि पाप तापोंसे त्रास देनेवाली इस घनघोर अन्धकारमयी निशा का परिवर्तन करके शान्ति दायक सतोगुणी ऊषा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के स्वागत में यह यज्ञ किया जा रहा है। इसमें सम्मिलित होना हर एक जागृत आत्मा का पवित्र कर्त्तव्य है।

तप से ही शक्ति उत्पन्न होती है। सृष्टि के आदि से लेकर अब तक जिस किसी ने भी कोई भौतिक या आत्मिक वरदान पाया है वह तप द्वारा ही पाया है। समस्त सुखों, सम्पत्तियों, सफलताओं, शक्तियों का कारण तप है। जब तप की पूँजी समाप्त हो जाती है तो बड़े-बड़े प्रतापी, कटे हुए वृक्ष की तरह भूमि पर गिर पड़ते हैं। वह आत्मबल जिसके द्वारा परमात्मा को प्राप्त किया जाता है, वह ब्रह्म तेज जिससे समस्त संसार काँपता है, वह दिव्य शक्ति जिसके कारण समस्त सम्पदाएँ करतल गत होती हैं, केवल तप द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। इस सहस्रांशु यज्ञ द्वारा एक महान् तपश्चर्या का आयोजन किया गया है। सहस्रों ऋत्वजों की सम्मिलित शक्ति उत्पन्न होगी, उसके द्वारा लोक कल्याण का भारी प्रयोजन सिद्ध होगा।

त्रेता में ऋषियों ने अपना थोड़ा-थोड़ा रक्त संचय करके एक घट भरा था और उसे भूमि में गाड़ दिया था, उससे सीता जी उत्पन्न हुईं और रावण के विनाश एवं राम राज्य की स्थापना का कारण हुईं। देवताओं की सम्मिलित शक्ति से ही "दुर्गा" उत्पन्न हुई थीं जिनके द्वारा भयंकर असुरों का विनाश हुआ। आज भी अनेक प्रकार के पाप तापों से, अनीति, अभाव और अविचारों से मानव जाति पीड़ित है, इसको हटाने के लिए इस सहस्रों ऋत्वजों के सम्मिलित तप से एक ऐसी प्रचण्ड शक्ति का आविर्भाव होगा जो दुरितों का विध्वंस करके शान्ति दायक भविष्य का निर्माण करेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस युग का यह असाधारण एक अभूतपूर्व यज्ञ है। इसके परिणाम अत्यन्त महान होंगे। इसके पीछे प्रभु की प्रचण्ड प्रेरणा एवं महान योजना सन्निहित है। इसमें सम्मिलित होकर साधना करना अपनी अलग अकेली साधना की अपेक्षा अनेक गुना उत्तम है। लङ्कादहन में वानरों की और गोवर्धन उठाने में ग्वाल-बालों को जो श्रेय प्राप्त हुआ था वह इस महान् यज्ञ के ऋत्विजों को भी प्राप्त होगा। यों साधारण रीति से भी जो लोग श्रद्धापूर्वक माता का अञ्चल पकड़ते हैं उन्हें आशा जनक परिणाम प्राप्त होता है। हमें अपने दीर्घ कालीन अनुभव के आधार पर यह सुनिश्चित विश्वास है कि कभी किसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती। परन्तु इस यज्ञ में सम्मिलित होकर साधना करने के सत्यपरिणाम की आशा तो बहुत अधिक की जा सकती है।

इस यज्ञ में किसने कितना भाग लिया? इसका परिणाम संसार के लिए कितना कल्याण कारक सिद्ध हुआ? सम्मिलित होने वालों को व्यक्तिगत रूप से क्या लाभ हुआ? इन सब बातों का एक सचित्र इतिहास भी बनेगा और युग-युगान्तरों तक इसमें सम्मिलित होने वालों का यश प्रकाशवान रहेगा।

यह यज्ञ सम्भवतः २४ मास में पूरा हो जाने की आशा है। पर आवश्यकतानुसार यह तीन वर्ष भी चल सकता है। इसमें धार्मिक प्रवृत्ति के कोई भी द्विज स्त्री-पुरुष प्रसन्नता पूर्वक भाग ले सकते हैं। कम से कम एक वर्ष तक सम्मिलित रहना आवश्यक है। अधिक चाहे जितने समय तक शामिल रहा जासकता है। किसी भी मासकी अमावस्या या पूर्णमासी से साधना प्रारम्भ करके इस यज्ञ में सम्मिलित हो सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस यज्ञ में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति 'ऋत्विज' कहे जायँगे। प्रत्येक 'ऋत्विज' को एक वर्ष तक नियमित रूप से यह पाँच व्रत पालन करने होंगे। (१) जप, (२) हवन, (३) उपवास, (४) आराधन, (५) ब्रह्म संदीप।

जप कम से कम गायत्री की ५ माला (५४० मन्त्रोंका) नित्य करना चाहिये। और रविवार को १ माला अधिक जपनी चाहिये। इस प्रकार एक वर्ष में २ लाख जप पूरे होंगे। जिन सज्जनों को अवकाश और उत्साह हो उन्हें अधिक जप करना चाहिए। जो पूरा गायत्री मन्त्र न जप सकें वे लघु पञ्चाक्षरीय गायत्री (ॐ भूर्भुवः स्वः) का साधन करें।

प्रत्येक मास की पूर्णमासी या अन्तिम रविवार को १०८ गायत्री मन्त्रों का हवन करना चाहिए। जो सज्जन हवन न कर सकें वे हमारे लिए एक हजार अरसी (दस माला) जप करदें। बदले में हम उनके लिए १०८ आहुतियों का हवन कर देंगे। एक वर्ष में सवा हजार आहुतियों का हवन होना चाहिए।

उपवास प्रत्येक रविवार को रखना चाहिए फल दूध पर रहने की जिन्हें सुविधा न हो वे एक समय बिना नमक का अल्पाहार लेकर उपवास कर सकते हैं।

गायत्री माता का चित्र स्थापित करके उसकी प्रतिदिन धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत, पुष्प आदि से पूजा आरती वन्दना आदि करने को आराधना करते हैं। ऋत्विज के लिए आराधना भी आवश्यक है। जो सज्जन निराकार उपासक हों वे धूप बत्ती आदि में अग्नि की ज्योति प्रज्वलित करके उसे माता का प्रतीक मान कर उसकी पूजा आराधना करलें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म संदीप का अर्थ है गायत्री विद्या के गुप्त ज्ञान का समुचित प्रकाश करना। (१) गायत्री साहित्य का स्वयं सर्वांग पूर्ण स्वाध्याय बार-बार करना जिससे इस विद्या के अनेकों गुप्त रहस्यों की भली प्रकार जानकारी हो जाय तथा (२) दूसरे धार्मिक प्रवृत्ति के सत्पुरुषों को अपना साहित्य पढने देना, जिससे उनकी अभिरुचि भी इस परम कल्याण-कारी मार्ग में हो। यह दोनों कार्य ब्रह्म संदीप कहलाते हैं।

हो सके तो पूरी १७ पुस्तकें जो करीब २१) की हैं मँगा लेनी चाहिए न हो सके तो ११ छोटी पुस्तक जो ३॥=) की हैं मँगाकर अपना छोटा सा गायत्री पुस्तकालय बना लेना चाहिए पुस्तकों की जिल्द बनवाकर रख लेनी चाहिए और अपने निकट जो भी धार्मिक प्रवृत्ति के मनुष्य हैं। उन्हें एक-एक करके यह पुस्तकें पढाना चाहिए और प्रयत्न करना चाहिए कि वे भी सहस्राँशु यज्ञ में भागीदार बनें। इस प्रकार जितने ऋत्विज बढाये जा सकें बढ़ाने का पूरा-पूरा प्रयत्न करना चाहिए ताकि यज्ञ का इतना विशाल कार्य-क्रम पूरा हो सके। एक वर्ष में कम से कम ५ ऋत्विज बना कर ब्रह्म संदीप पूरा करना भी प्रत्येक साधक का वैसा ही आवश्यक कर्त्तव्य है जैसा कि जप, हवन, उपवास और आराधना को पूरा करना।

अपनी गायत्री पुस्तकें दूसरों को पढने की सूचना के लिए नोटिस बांटने से काम सरल हो जाता है। आपके गायत्री पुस्तकालय के लिए ऐसा विज्ञापन गांव हो २५० शहर हो तो ५०० हम अपने खर्च से छाप कर अपने पोस्टेज से आप के पास भेज सकते हैं। इसके लिए अपने मकान का पूरा पता और पुस्तकें मिलने का समय भी लिखना चाहिए जो इन नोटिसों में छाप दिया जाय।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ ऐसे प्रतिष्ठित पत्र धार्मिक प्रवृत्ति के स्वाध्याय शील सज्जनों के पते हमें लिखने चाहिए जिन तक आपकी पहुँच न हो पाती हो। उनको यहाँ से गायत्री उपासना के लिए प्रेरणा दी जायगी।

आश्विन और चैत्र की नवरात्रि में साधारण साधनों की अपेक्षा कुछ अधिक जप और तप करना चाहिए।

नियत समय पर जप या हवन न कर सकें तो उतना हमसे उधार लेकर अपनी साधना पूरी की जा सकती है और हमारा उधार पीछे चुकाया जा सकता है।

इस यज्ञ में सम्मिलित होने वालों को एक अलग कागज पर अपना संकल्प लिख कर भेजना चाहिए। जिसमें (१) आरम्भ करने की तिथि, (२) प्रतिदिन की जप संख्या, (३) उपवास किस प्रकार करेंगे, (४) हवन पूर्णमासी को या महीने के अन्तिम रविवार को करेंगे। (५) आराधना किस प्रकार करेंगे, (६) ब्रह्म संदीप के लिए किस प्रकार कितना कार्य करेंगे। यह सब बातें विस्तार पूर्वक लिखते हुए अपना पूरा नाम, पूरा पता, आयु, वर्ण आदि का उल्लेख करना चाहिए। और हर महीने अपने कार्य की सूचना मथुरा भेजते रहनी चाहिए जिससे यज्ञ की प्रगति का ठीक विवरण विदित होता रहे। कोई बात पूछनी हो तो जवाबी पत्र भेजना चाहिए।

यह यज्ञ सहस्र अश्वमेधों से अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें सम्मिलित होने वाले ऋत्विजों को जो शक्ति और शान्ति मिलेगी वैसी अकेली स्वतन्त्र साधनासे मिलनी सम्भव नहीं है। इस सम्मिलित तपश्चर्या से संसार का भी लाभ होगा और अपना भी। लोक कल्याण के लिए किया हुआ पुण्य परमार्थ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने लिए भी कल्याणकारक ही होता है। तप का धन ही मनुष्य जीवन का वास्तविक धन है। इसे संचित करना धन जमा करने से अधिक बुद्धिमानी की बात है।

हमारे अनेक मित्र हमसे बहुधा पूछते रहते हैं कि 'हमारे योग्य कोई सेवा हो तो बताइए'। हमारी आवश्यकताएँ बड़ी सीमित हैं इसलिए व्यक्तिगत रूप से हमें कभी किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए उन पूछने वाले सज्जनों को धन्यवाद देकर चुप हो जाते हैं। पर आज वह अवसर आया है, जिसके लिये हम अपने सभी मित्रों और स्वजन सम्बन्धियों को सहायता और सेवा के लिए आमन्त्रित करते हैं। क्योंकि जितना बड़ा बोझ कन्धे पर लिया है वह अनेक साथियों के हार्दिक सहयोग से ही उठाया जाना सम्भव है। यदि यह यज्ञ पूरा न हुआ तो हमें मर्मान्तक कष्ट होगा और उसकी शान्ति के लिए हमें ऐसा प्रायश्चित्य करना पड़ सकता है जो हमारे प्रेमियों को दुख का कारण होगा।

जप, हवन, उपवास की पूर्ति आसानी से हो जायगी पर सवालक्ष सत्पात्रों को गायत्री विद्या का समुचित ज्ञान देना निश्चित ही कठिन है। इस कार्य में विशेष रूप से हाथ बटाने की अपने हर प्रेमी से हमारी हार्दिक प्रार्थना है।

इस महान् यज्ञ में साझीदार बनने के लिए हम उन सभी आत्माओं को आमन्त्रित करते हैं जिसके अन्दर दैवी प्रकाश काम कर रहा हो, जिनके अन्तःकरण में माता की दिव्य प्रेरणा काम कर रही हो। इस आमन्त्रण को स्वीकार करना, इस साझेदारी में सम्मिलित होना—कितना श्रेयस्कर है इसकी कोई भी सत्पात्र परीक्षा कर सकता है।

———

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के निजी अनुभवों का विस्तृत वर्णन इस पुस्तक में है। इनका अनुकरण करके आशाजनक लाभ उठाया जा सकता है। मूल्य ३॥)

५—गायत्री का मन्त्रार्थ—गायत्री के एक-एक अक्षर की विस्तृत शास्त्रीय व्याख्या और अनेक ऋषियों के किये हुए अनेक प्रकार के अर्थों का संग्रह। मूल्य १॥)

६—गायत्री चित्रावली—इस पुस्तक में आर्ट पेपर पर छपे हुए गायत्री के बड़े ही कलापूर्ण २४ तिरंगे चित्र तथा उनका विस्तृत परिचय है। किस प्रयोजन के लिये गायत्री का ध्यान किस रूप में किया जाय यह जानकारी भली प्रकार हो जाती है। मूल्य १॥)

गायत्री का छोटा सैट—जो सज्जन उपरोक्त ग्रंथ नहीं खरीद सकते उनके लिए संक्षिप्त जानकारी कराने वाली निम्न पुस्तकें छापी गई हैं—(१) गायत्री ही कामधेनु है ।=), (२) गायत्री का वैज्ञानिक आधार ।=), (३) गायत्री की सर्व सुलभ साधनायें ।=), (४) वेद शास्त्रों का निचोड़ गायत्री ।=), (५) गायत्री के १४ रत्न प्रथम भाग ।=), (६) गायत्री के १४ रत्न दूसरा भाग ।=), (७) अनादि गुरु मंत्र गायत्री ।=), (८) विपत्ति निवारणी गायत्री ।=), (९) स्त्रियोंको गायत्री का अधिकार ।=),(१०) सचित्रगायत्री ।=) (११) सर्व शक्तिमान गायत्री =) गायत्री का रंगीन चित्र -)

मूल्य में कमी के लिये लिखा पढ़ी करना बिलकुल व्यर्थ है। छः रुपये से अधिककी पुस्तकें लेनेपर डाक खर्च हमारा

पता—"अखण्ड-ज्योति" प्रेस, मथुरा।